News Coverage
Republic Day Tableau 2025
Media Centre

All India Radio News
@airnewsalerts

The grand tableau presented by the @MinOfCultureGoI on #RepublicDay2025 is a magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity.

Inspired by Prime Minister @narendramodi's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,' this tableau beautifully showcases the nation's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development.

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition. Meanwhile, the kinetic Kalpavriksha, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.

#RepublicDayParade2025 | #RepublicDay2025

UNI BREVITY ACCURACY SPEED यूनीवार्ता भारत की अग्रणी संवाद समिति
Monday, Feb 3 2025 | Time 10:42 Hrs(IST)

गणतंत्र दिवस पर संस्कृति मंत्रालय की झांकी में दिखेगा विकसित राष्ट्र में संस्कृति, नवाचार का योगदान

नयी दिल्ली, 22 जनवरी (वार्ता) राजधानी दिल्ली में कर्तव्य पथ पर इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से प्रस्तुत की जाने वाली झांकी में देश की सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और समृद्ध धरोहर का भव्य प्रदर्शन दिखेगा।

मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, यह झांकी प्रधानमंत्री के 'विरासत भी, विकास भी' मंत्र से प्रेरित है। झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के विजन-2047 में संस्कृति और नवाचार के योगदान को उजागर करती है।

झांकी के मुख्य आकर्षणों में कुम्हार के चाक पर याढ़, काइनैटिक कल्पवृक्ष और डिजिटल स्क्रीन शामिल हैं।

संस्कृति मंत्रालय के सचिव अरुणीश चावला ने बुधवार को यहां इस झांकी के विषय में कहा, "संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है।

श्री चावला ने कहा कि इस झांकी का उद्देश्य, भारतीय संस्कृति, परंपराओं और रचनात्मकता को भव्य तरीके से प्रस्तुत करना है।

PIB

कल्पवृक्ष से लेकर सोने की चिड़िया तक: भारत की रचनात्मकता की एक झलक

प्रधानमंत्री के मंत्र 'विरासत भी, विकास भी' से प्रेरित होकर, गणतंत्र दिवस पर संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी

Posted On: 22 JAN 2025 6:32PM by PIB Delhi

गणतंत्र दिवस पर संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का एक शानदार उत्सव है। प्रधानमंत्री के मंत्र 'विरासत भी, विकास भी' से प्रेरित यह झांकी देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सतत विकास की अपार संभावनाओं को बखूबी प्रदर्शित करती है।

संस्कृति सचिव श्री अरुणेश चावला ने झांकी के महत्व को बताया:

"गणतंत्र दिवस पर संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की विविधता, रचनात्मकता और विकास का उत्सव है। प्रधानमंत्री के मूल मंत्र 'विरासत भी, विकास भी' से प्रेरित यह झांकी 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने का संदेश देती है।

कुम्हार के चाक पर खूबसूरती से रखा गया प्राचीन तमिल संगीत वाद्य 'याध' हमारी संगीत परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है। इस बीच, गतिशील कल्पवृक्ष, जो 'गोल्डन बर्ड' में बदल जाता है, रचनात्मकता और प्रगति का प्रतीक है।

डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिजाइन और पर्यटन की विविधता को प्रदर्शित करती हैं। यह झांकी हर भारतीय को अपनी विरासत पर गर्व करने और उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ाने के लिए आमंत्रित करती है।"

झांकी की मुख्य झलकियाँ:

कुम्हार के चाक पर याध: एक प्राचीन तमिल संगीत वाद्ययंत्र, जो भारत की संगीत परंपराओं की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है।

गतिशील कल्पवृक्ष: रचनात्मकता से भरी एक जीवंत संरचना जो 'स्वर्ण पक्षी' में बदल जाती है, जो भारत की सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।

डिजिटल स्क्रीन: प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिजाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों की विविधता का प्रतिनिधित्व करने वाली दस डिजिटल स्क्रीन।

यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक शक्तिशाली और रचनात्मक भविष्य की कल्पना भी करती है। यह हर भारतीय को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के पथ पर आगे बढ़ने के लिए आमंत्रित करती है। इससे एक उज्जवल, अधिक समावेशी भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।

****

कल्पवृक्ष से सोने की चिड़िया तक : भारत की रचनात्मकता की झलक

गणतंत्र दिवस पर प्रस्तुत केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का शानदार उत्सव है। यह झांकी प्रधानमंत्री मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित होकर देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को भी रेखांकित करती है। यह कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ती है।

इस अवसर पर संस्कृति सचिव अरूणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

झांकी के मुख्य आकर्षण

1.**कुम्हार के चाक पर याढ़** : प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है।

2.**काइनैटिक कल्पवृक्ष** : यह रचनात्मकता से भरपूर एक संरचना है, जो धीरे-धीरे 'सोने की चिड़िया' का रूप ले लेती है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।

3.**डिजिटल स्क्रीन** : झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिज़ाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है।

INDIA BLOOMS

The tableau is inspired by PM Narendra Modi's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi'. (Image credit: PIB)

Ministry of Culture's Republic Day tableau celebrates 'Virasat Bhi, Vikas Bhi'

India Blooms News Service | @indiablooms | Jan 22, 2025, at 09:42 pm

#RepublicDay #MinistryOfCulture #RepublicDayTableau #RepublicDayParade

New Delhi: The Ministry of Culture's Republic Day tableau will showcase India's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development.

The tableau concept is inspired by Prime Minister Narendra Modi's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,'—a magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity.

> **Remarking on the significance of the tableau, Culture Secretary Arunesh Chawla said, "The tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a celebration of our country's diversity, creativity, and development. Inspired by the honorable Prime Minister's core mantra 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,' this tableau conveys the message of realizing the vision of a developed India by 2047."**

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition.

> **Meanwhile, the kinetic Kalpavriksha, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.**

The digital screens showcase the diversity of performing arts, literature, architecture, design, and tourism.

> **"This tableau invites every Indian to take pride in their heritage and step towards a bright future," Chawla stated.**

> **The tableau begins with the Yaadh on the Potter's Wheel, an ancient Tamil musical instrument that symbolises the profound depth and continuity of India's musical traditions.**

This representation highlights the nation's enduring artistic heritage and the timelessness of its cultural expressions.

> **A striking feature of the tableau is the Kinetic Kalpavriksha, a vibrant and dynamic structure teeming with creativity.**

This unique element transforms into the 'Golden Bird,' a powerful symbol of India's rich cultural heritage and its impressive economic progress.

The transformation serves as a metaphor for the nation's journey of growth and innovation.

> **Adding a modern touch, the tableau incorporates ten digital screens that celebrate the diversity of India's creative fields.**

These screens vividly portray the richness of performing arts, literature, architecture, design, and tourism, capturing the multifaceted and dynamic nature of the country's cultural landscape.

This tableau not only reflects India's glorious past but also envisions a powerful and creative future.

It invites every Indian to take pride in their cultural heritage and step forward on the path of development, paving the way for a brighter, more inclusive future.

DELHI NOW

From Kalpavriksha to the Golden Bird: A Glimpse of India's Creativity

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition. Meanwhile, the kinetic Kalpavriksha, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition.

New Delhi: The grand tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity. Inspired by the honorable Prime Minister's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,' this tableau beautifully showcases the nation's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development.

Secretary of Culture, Arunesh Chawla, remarked on the significance of the tableau:

"The tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a celebration of our country's diversity, creativity, and development. Inspired by the honorable Prime Minister's core mantra 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,' this tableau conveys the message of realizing the vision of a developed India by 2047.

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition. Meanwhile, the kinetic Kalpavriksha, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.

The digital screens showcase the diversity of performing arts, literature, architecture, design, and tourism. This tableau invites every Indian to take pride in their heritage and step towards a bright future."

Key Highlights of the Tableau:

1. Yaadh on the Potter's Wheel: An ancient Tamil musical instrument, symbolizing the depth and continuity of India's musical traditions.

2. Kinetic Kalpavriksha: A vibrant structure full of creativity that transforms into the 'Golden Bird,' symbolizing India's cultural heritage and economic progress.

3. Digital Screens: Ten digital screens representing the diversity of creative fields such as performing arts, literature, architecture, design, and tourism.

This tableau not only reflects India's glorious past but also envisions a powerful and creative future. It invites every Indian to take pride in their cultural heritage and step forward on the path of development, paving the way for a brighter, more inclusive future.

हिन्दुस्तान

वहीं, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार इस बार मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। इसमें कहा गया है कि यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विजन 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

बयान के अनुसार इस मौके पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है।...कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

NEWS DRUM

Culture Ministry's R-Day tableau a dazzling celebration of India's magnificent heritage

NewsDrum Desk
22 Jan 2025 23:05 IST • Updated On 26 Jan 2025 15:05 IST

Follow Us

New Delhi: From an ancient Tamil musical instrument depicted rotating on a symbolic Konark wheel to an emblematic portrayal of a 'Golden Bird' symbolising India's cultural heritage and economic progress, the Ministry of Culture's Republic Day tableau is a celebration of the country's rich and storied past.

A sneak preview of the 31 tableaux that will roll down Kartavya Path during the 76th Republic Day celebrations here was given to the media at the Rashtriya Rangshala Camp at Delhi Cantonment on Wednesday.

The grand tableau that will be showcased by the ministry on the Kartavya Path is a "magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity".

Inspired by the Prime Minister's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi', the tableau beautifully showcases the nation's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development, the ministry said in a statement.

"The tableau conveys the message of realising the vision of a developed India by 2047," Union Culture Secretary Arunesh Chawla said.

The ancient Tamil musical instrument 'Yaadh' beautifully placed on "a potter's wheel (depicted with Konark wheel of Odisha), represents the depth and continuity of our musical tradition. And, the kinetic 'Kalpavriksha' which transforms into a 'Golden Bird' symbolises creativity and progress, it said.

The wheel carries the words -- 'Virasat Bhi, Vikas Bhi' -- in Hindi and English along its circumference.

The Konark wheel has also been depicted on the facing surface of the tableau.

Ten digital screens on the sides showcase the diversity of performing arts, literature, architecture, design, and tourism. This tableau invites every Indian to take pride in their heritage and step towards a bright future, it added.

"This tableau not only reflects India's glorious past but also envisions a powerful and creative future. It invites every Indian to take pride in their cultural heritage and step forward on the path of development, paving the way for a brighter, more inclusive future," the ministry said.

PRESS TRUST OF INDIA
India's premier news agency

Culture Ministry's R-Day tableau a dazzling celebration of India's magnificent heritage

NEW DELHI: From an ancient Tamil musical instrument depicted rotating on a symbolic Konark wheel to an emblematic portrayal of a 'Golden Bird' symbolising India's cultural heritage and economic progress, the Ministry of Culture's Republic Day tableau is a celebration of the country's rich and storied past.

A sneak preview of the 31 tableaux that will roll down Kartavya Path during the 76th Republic Day celebrations here was given to the media at the Rashtriya Rangshala Camp at Delhi Cantonment on Wednesday.

The grand tableau that will be showcased by the ministry on the Kartavya Path is a "magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity".

abp न्यूज़

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की झांकी 'विरासत भी, विकास भी'

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार इस बार मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है. इसमें कहा गया है कि यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विजन 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है.

संस्कृति सचिव का बयान

संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारी अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है. यह झांकी 'विज़न 2047' के तहत भारत के विकसित राष्ट्र बनने में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है."

'विज़न 2047' का संदेश

यह झांकी भारत के 'विज़न 2047' के तहत, समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक विकास के सह-अस्तित्व को दर्शाते हुए, भविष्य में देश के विकास की झलक पेश करेगी.

वहीं, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार इस बार मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। इसमें कहा गया है कि यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

बयान के अनुसार इस मौके पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा कि संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है।...कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।

ପ୍ରଗତିବାଦୀ
PRAGATIVADI

Kalpavriksha to the Golden Bird: A Glimpse of India's Creativity

Inspired by the Prime Minister's mantra of 'Virasat Bhi, Vikas Bhi,' the grand tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day

by Yajati Keshari Rout — 22-Jan-2025 in Lifestyle & Culture 0

The grand tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity.

Inspired by the Prime Minister's mantra of '*Virasat Bhi, Vikas Bhi*,' this tableau beautifully showcases the nation's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development.

Secretary of Culture, Arunesh Chawla, remarked on the significance of the tableau:

> The tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a celebration of our country's diversity, creativity, and development. Inspired by the Prime Minister's core mantra '*Virasat Bhi, Vikas Bhi*,' this tableau conveys the message of realizing the vision of a developed India by 2047.

> The ancient Tamil musical instrument '*Yaadh*,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition. Meanwhile, the kinetic *Kalpavriksha*, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.
>
> The digital screens showcase the diversity of performing arts, literature, architecture, design, and tourism. This tableau invites every Indian to take pride in their heritage and step towards a bright future.

Key Highlights of the Tableau:

- **Yaadh on the Potter's Wheel:** An ancient Tamil musical instrument, symbolizing the depth and continuity of India's musical traditions.
- **Kinetic *Kalpavriksha*:** A vibrant structure full of creativity that transforms into the 'Golden Bird,' symbolizing India's cultural heritage and economic progress.
- **Digital Screens:** Ten digital screens representing the diversity of creative fields such as performing arts, literature, architecture, design, and tourism.

This tableau not only reflects India's glorious past but also envisions a powerful and creative future. It invites every Indian to take pride in their cultural heritage and step forward on the path of development, paving the way for a brighter, more inclusive future.

राष्ट्र संवाद
JHAHIN/2009/1939

कल्पवृक्ष से सोने की चिड़िया तक: भारत की रचनात्मकता की झलक

कल्पवृक्ष से सोने की चिड़िया तक: भारत की रचनात्मकता की झलक
गणतंत्र दिवस पर प्रस्तुत केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का शानदार उत्सव है। यह झांकी माननीय प्रधानमंत्री के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित होकर देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है। यह कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ती है।
इस अवसर पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"
झांकी के मुख्य आकर्षण
1. कुम्हार के चाक पर याढ़ : प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है।
2. काइनैटिक कल्पवृक्ष : यह रचनात्मकता से भरपूर एक संरचना है, जो धीरे-धीरे 'सोने की चिड़िया' का रूप ले लेती है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।
3. डिजिटल स्क्रीन : झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिज़ाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है।

आपका अख़बार

गणतंत्र दिवस पर प्रस्तुत केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का शानदार उत्सव है। यह झांकी माननीय प्रधानमंत्री के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित होकर देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है। यह कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ती है।

इस अवसर पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनेटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

झांकी के मुख्य आकर्षण

1. **कुम्हार के चाक पर याढ़ :** प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है।
2. **काइनेटिक कल्पवृक्ष :** यह रचनात्मकता से भरपूर एक संरचना है, जो धीरे-धीरे 'सोने की चिड़िया' का रूप ले लेती है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।
3. **डिजिटल स्क्रीन :** झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिज़ाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है।

DAINIK INDIA 24X7
खबरें वही जो आपके लिए सही

Republic Day पर संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी: सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का उत्सव

यह झांकी हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है और हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है -संस्कृति सचिव, अरुणीश चावला

केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय ने गणतंत्र दिवस पर एक भव्य झांकी प्रस्तुत की, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का उत्सव है। प्रधानमंत्री के '**विरासत भी, विकास भी**' के मूलमंत्र से प्रेरित यह झांकी देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह भारत के विकसित राष्ट्र बनने के '**विज़न** 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "यह झांकी हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है और हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। इसमें कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ा गया है।"

1. **कुम्हार के चाक पर याढ़**
   प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है।
2. **काइनेटिक कल्पवृक्ष**
   रचनात्मकता से भरपूर यह संरचना धीरे-धीरे 'सोने की चिड़िया' का रूप लेती है, जो सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।
3. **डिजिटल स्क्रीन**
   झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिज़ाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। संस्कृति मंत्रालय की यह पहल हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का संदेश देती है।

rissadiary.com
Fueling Brand Odisha Since 20 Years

The grand tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a magnificent celebration of India's cultural diversity and creativity. Inspired by the Prime Minister's mantra of '*Virasat Bhi, Vikas Bhi*,' this tableau beautifully showcases the nation's rich cultural heritage and the vast possibilities of sustainable development.

Secretary of Culture, Shri Arunesh Chawla, remarked on the significance of the tableau:

"The tableau presented by the Ministry of Culture on Republic Day is a celebration of our country's diversity, creativity, and development. Inspired by the Prime Minister's core mantra '*Virasat Bhi, Vikas Bhi*,' this tableau conveys the message of realizing the vision of a developed India by 2047.

The ancient Tamil musical instrument '*Yaadh*,' beautifully placed on the potter's wheel, represents the depth and continuity of our musical tradition. Meanwhile, the kinetic *Kalpavriksha*, which transforms into the 'Golden Bird,' symbolizes creativity and progress.

The digital screens showcase the diversity of performing arts, literature, architecture, design, and tourism. This tableau invites every Indian to take pride in their heritage and step towards a bright future."

Key Highlights of the Tableau:

1. Yaadh on the Potter's Wheel: An ancient Tamil musical instrument, symbolizing the depth and continuity of India's musical traditions.
2. Kinetic *Kalpavriksha*: A vibrant structure full of creativity that transforms into the 'Golden Bird,' symbolizing India's cultural heritage and economic progress.
3. Digital Screens: Ten digital screens representing the diversity of creative fields such as performing arts, literature, architecture, design, and tourism.

This tableau not only reflects India's glorious past but also envisions a powerful and creative future. It invites every Indian to take pride in their cultural heritage and step forward on the path of development, paving the way for a brighter, more inclusive future.

संस्कृति मंत्रालय की झांकी कल्पवृक्ष से सोने की चिड़िया तक: भारत की रचनात्मकता की झलक

दिल्ली: विशेष संवाददाता।

गणतंत्र दिवस पर प्रस्तुत केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का शानदार उत्सव है. यह झांकी प्रधानमंत्री के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित होकर देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है. यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है. यह कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ती है.

इस अवसर पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है. यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है. कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है. वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है."

झांकी के मुख्य आकर्षण

कुम्हार के चाक पर याढ़ : प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है.

काइनैटिक कल्पवृक्ष : यह रचनात्मकता से भरपूर एक संरचना है, जो धीरे-धीरे 'सोने की चिड़िया' का रूप ले लेती है. यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है.

डिजिटल स्क्रीन : झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिज़ाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है. यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है.

NBT
नवभारत टाइम्स

संस्कृति मंत्रालय की झांकी में क्या है खास

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, इस बार मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है। देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। इसमें कहा गया है कि यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विजन 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

बयान के अनुसार इस मौके पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा कि संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विजन 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है, जबकि काइनैटिक कल्पवृक्ष 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, जो हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

R. भारत

'विरासत भी, विकास भी' से प्रेरित

वहीं, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान के अनुसार इस बार मंत्रालय की झांकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। इसमें कहा गया है कि यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है।

बयान के अनुसार इस मौके पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, "संस्कृति मंत्रालय की झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है।...कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ़ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो 'सोने की चिड़िया' में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।"

Sansad Tv-

https://www.youtube.com/watch?v=uGU4ZgAtw1g

Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

परेड में दिखेगी संस्कृति मंत्रालय की रचनात्मकता

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस परेड के लिए केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का उदाहरण पेश करेगी। यह झांकी प्रधानमंत्री के 'विरासत भी, विकास भी' मूलमंत्र से प्रेरित है। यह देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करने के साथ 'विज़न 2047' में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है। संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है।

हिन्दी दैनिक

आपका राष्ट्र, आपका संवाद

राष्ट्र संवाद

कल्पवृक्ष से सोने की चिड़िया तकः भारत की रचनात्मकता की झलक

गणतंत्र दिवस पर प्रस्तुत केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की भव्य झांकी भारत की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता का शानदार उत्सव है। यह झांकी माननीय प्रधानमंत्री के ह्यविरासत भी, विकास भीह्न मूलमंत्र से प्रेरित होकर देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। यह झांकी भारत के विकसित राष्ट्र बनने के ह्यविजन 2047ह्न में संस्कृति और रचनात्मकता के योगदान को रेखांकित करती है। यह कला, संगीत और परंपराओं की गहराई को आधुनिक व्यवसाय और नवाचार से जोड़ती है।

इस अवसर पर संस्कृति सचिव अरुणीश चावला ने कहा, ह्यसंस्कृति मंत्रालय की यह झांकी हमारे देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और सतत विकास की झलक है। यह झांकी न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सम्मान देती है, बल्कि देश के हर नागरिक को एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। कुम्हार के चाक पर प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र याढ हमारी परंपरा की गहराई और निरंतरता का प्रतीक है। वहीं, काइनैटिक कल्पवृक्ष जो ह्यसोने की चिड़ियाह्न में बदलता है, हमारी रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का संदेश देता है।ह्न

झांकी के मुख्य आकर्षण

1. कुम्हार के चाक पर याढ : प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र, जो भारत की संगीत परंपरा की स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक है।
2. काइनैटिक कल्पवृक्ष : यह रचनात्मकता से भरपूर एक संरचना है, जो धीरे-धीरे ह्यसोने की चिड़ियाह्न का रूप ले लेती है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक प्रगति का प्रतीक है।
3. डिजिटल स्क्रीन : झांकी के दोनों ओर लगे दस डिजिटल स्क्रीन प्रदर्शन कला, साहित्य, वास्तुकला, डिजाइन और पर्यटन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाती है, बल्कि एक सशक्त और रचनात्मक भविष्य का सपना भी दिखाती है। यह झांकी हर नागरिक को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देती है।

Jansatta

कर्तव्य पथ पर पैंतालीस नृत्य शैलियों से बांधा समां

पांच हजार कलाकारों ने दी प्रस्तुति

जनसत्ता संवाददाता

संस्कृति मंत्रालय ने गणतंत्र दिवस के मौके पर 'जयति जय मम: भारतम' के द्वारा देश की विविधता में एकता को प्रदर्शित किया। यह प्रस्तुति भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आदिवासी और लोक रूपों की समृद्ध और रंगीन वंशावली और विरासत के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों से आए पांच हजार कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

यह प्रस्तुति विकसित भारत, विरासत भी विकास भी' और 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के विषय पर आधारित थी। नृत्य प्रस्तुति के दौरान कलाकारों ने अपनी परंपरा के अनुसार वेशभूषा, आभूषण, सिर की पोशाक, भाले-तलवार और वाद्ययंत्रों के जरिए जीवंत किया। वहीं संस्कृति मंत्रालय की झांकी ने 'स्वर्णिम भारत : विरासत भी, विकास भी' के दृष्टिकोण को परिभाषित किया।

झांकी पर कल्पवृक्ष था जिसका गतिशील रूप धीरे-धीरे सोने की चिड़िया में परिवर्तित होता है। झांकी के दोनों ओर दस डिजिटल मेहराब बनाए गए हैं जो भारत की रचनात्मक और सांस्कृतिक उद्योगों जैसे प्रदर्शन कला, साहित्य, सिनेमा, दृश्य कला और डिजाइन को प्रदर्शित कर रहा था। साथ ही झांकी में कोणार्क के प्रतीकात्मक चक्र पर घूमते हुए प्राचीन तमिल वाद्य यंत्र को दर्शाया गया था।

संगीत नाटक अकादमी द्वारा जयति जय मां भारतम प्रस्तुति में 11 मिनट का सांस्कृतिक प्रदर्शन किया गया। इसमें विकसित भारत, विरासत भी विकास भी और एक भारत श्रेष्ठ भारत की थीम को भी प्रदर्शित किया गया।

5000 से अधिक लोक और आदिवासी कलाकारों ने देश के विभिन्न हिस्सों की 45 नृत्य शैलियों का प्रदर्शन किया। सभी अतिथियों को प्रस्तुति देखने को मिले, इसके लिए कलाकारों ने पहली बार पूरे कर्तव्य पथ को कवर किया। जयति जय मां भारतम प्रस्तुति के गीत सुभाष सहगल ने लिखे और संगीत शंकर महादेवन ने दिया। देश

नृत्य

नई दिल्ली में कर्तव्य पथ पर लोक नृत्य पेश करते हुए कलाकार।

के विभिन्न हिस्सों के 5,000 लोक और जनजातीय कलाकारों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा, और भाले, तलवार जैसे औजारों एवं ढोल के साथ अपने नृत्य रूपों को जीवंत कर दिया।

पहली बार, इस प्रदर्शन में विजय चौक और सी हेक्सागन से लेकर सम्पूर्ण कर्तव्य पथ को शामिल किया गया। इससे सभी स्थानों से अतिथियों को प्रस्तुति की झलक मिल पाई। संगीतमय प्रदर्शन में भारत के कोने-कोने से आए युवा, कलात्मक विरासत और महिला सशक्तीकरण का प्रतिनिधित्व करने वाले लोक और जनजातीय कलाकारों ने भाग लिया, जो भारत की विरासत की विविधता और संस्कृति की विविधता का प्रतिनिधित्व करते थे।